B.A. I Part
Hindi Hons

② डॉ० आरती कुमारी

के बीच आपस का भावनाएँ फैली हुई थी। कबीर ने सर्वप्रथम इन्हीं ही मिटाने का प्रयास किया। उनकी दृष्टि में सभी मनुष्य समान है। न वे छोटे है न बड़े, न वे मुसलमान है न पंडित और न वे ब्राह्मण है न शूद्र। उनका तो स्पष्ट कहना है कि समाज में किसी को किसी की जाति नहीं पूछना चाहिए —

संतों जात न पूछो निरगुनियाँ।
साध बाह्मन साध छत्तरी, साधे जाती बनियाँ।
साधन माँ छत्तीस कौम है, टेढ़ी तोर पूछनियाँ।
साधे नाऊ साधे धोबी, साध जाति है बरियाँ।

कबीर के समय में उत्तरभारत के अन्तर्गत हिन्दू और मुसलमान दो महान जातियाँ निवास करती थी और इन दोनों में ही अपने-अपने आचारों, रीति-रिवाजों, सामाजिक एवं धार्मिक मान्यताओं इत्यादि के बारे में बहुत विभिन्नता थी। वे द्वेष एवं वैमनस्य रखती थी तथा कोई भी किसी से समझौता करने के लिए तैयार नहीं था। उस समय हिन्दू एवं मुसलमान धर्मों के ठेकेदार भोली-भाली जनता को बाह्याडम्बर आलौकिक पाखंडों, अंधविश्वासों एवं मिथ्या आडम्बरों में फँसाये रखते थे तथा अपने मत को श्रेष्ठ प्रतिपादित करते हुए पारस्परिक ईर्ष्या-द्वेष को प्रश्रय देते थे। इससे समाज और देश का संतुलन बिगड़ रहा था। उस समय दोनों जातियों में एकता स्थापित करने की आवश्यकता थी। कबीर दोनों जातियों के बाह्याडम्बरों पर प्रहार करते हुए उनमें एकता स्थापित करने का कार्य करते हैं। वे स्पष्ट कहते हैं कि भगवान को मंदिर-मस्जिद में खोजने की आवश्यकता नहीं है। वे कहते हैं कि पूजा-पाठ, यज्ञ-अनुष्ठान, तीर्थ-व्रत तथा कर्मकाण्ड इत्यादि से भगवान को प्राप्त नहीं किया जा सकता। भगवान को केवल सच्चे दिल से पुकारने की आवश्यकता है। भगवान को कहीं खोजने की आवश्यकता नहीं है, वे हमेशा हर जगह हर व्यक्ति के साथ हर समय उपस्थित है —

क्रमशः —